हिन्दू वर्ण-व्यवस्था

भारतीय मनीषियों ने जहाँ व्यक्ति के लिए धर्म की व्यवस्था की वहाँ समाज में भी उसका स्थान निश्चित कर समाज-व्यवस्था के स्वरूप का निर्धारण भी किया है। प्रत्येक व्यक्ति का गुण-कर्म के अनुसार उसकी भौतिक उन्नति के लिए पथ नियोजित किया है। जिस प्रकार उन्होंने व्यक्ति के जीवन को चार सोपानों में बाँटा उसी प्रकार उन्होंने समाज में भी चार वर्ग किये, जिन्हें हम वर्ण की संज्ञा के नाम से जानते हैं। ये चार वर्ण क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हैं। भगवान कृष्ण ने गीता में लिखा है कि "चारों वर्णों की सृष्टि मैंने गुण एवं कर्म के आधार पर की।" ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में लिखा है कि "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। उरु तदस्य भूद्वैश्यः पदाभ्यां शूद्रोऽजायत।" इस श्लोक से भी यही अर्थ निकलता है कि ब्राह्मणों की मुख से, भुजाओं से क्षत्रियों की, उदर से वैश्यों की तथा पैरों

मनीषी	m	thinker
निर्धारण करना	m+t	to prescribe
गुण-कर्म	m+m	attributes and acts (<u>also</u>) secondary attributes (really means <u>karma</u> here)
भौतिक	adj	material, corporeal
उन्नति	f	progress
नियोजित	adj	appointed, employed
वर्ग	m	class
संज्ञा	f	noun, word, name
सृष्टि	f	creation
सूक्त	m	a <u>mantra</u> of the Vedas
भुजा	f	arm
उदर	m	abdomen

से शूद्रों की उत्पत्ति हुई। इसका लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट है कि इस प्रकार की उत्पत्ति का तात्पर्य भी कर्म के अनुसार ही है। "ब्राह्मण की उत्पत्ति मुख से बताई गई। वह शरीर का सबसे अभिजात भाग है, इसीलिए ऋग्वेद में भी इसे अभिजात वर्ग के नाम से सम्बोधित किया गया है। इसी प्रकार भुजा का गुण रक्षा करना और गौरव प्राप्त करना है। इसी से भुजा से उद्भूत क्षत्री को गौरव अर्जित करने वाला बताया गया है। उदर का कार्य शरीर का अन्न के द्वारा शक्ति प्रदान करना अथवा शरीर के लिए लाभ अर्जित करना है, इसी से उदर से उद्भूत वैश्यों को लाभ अर्जित करने के गुण से विभूषित किया गया है।" उपनिषद् एवं मनुस्मृति में भी वर्ण का आधार गुण एवं कर्म है।

प्रत्येक वर्ण के व्यक्ति का व्यवसाय एक दूसरे से भिन्न है, यथा -

(१) <u>ब्राह्मणों के गुण-कर्म</u> - मनुस्मृति में लिखा है कि ब्राह्मण के लिए अध्ययन एवं अध्यापन, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना तथा दान लेना,

---

उत्पत्ति	f	origin
लाक्षणिक	adj	metaphorical
तात्पर्य	m	meaning
अभिजात	adj	well-born
सम्बोधित	adj	called, named
गौरव	m	glory, honour
अर्जित	adj	earned, acquired
अन्न	m	food
लाभ	m	profit, gain
विभूषित	adj	embellished
व्यवसाय	m	occupation
अध्ययन	m	study
अध्यापन	m	teaching

धर्म बताये गये हैं। परन्तु उसे आदर लेने तथा दान लेने से बचने का प्रयास करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उसका तेज शीघ्र नष्ट हो जाता है। ये सभी गुण ब्राह्मण में सात्विक प्रवृत्ति के द्योतक हैं।

(२) <u>क्षत्रियों के गुण-कर्म</u> - मनुस्मृति तथा गीता दोनों में ही क्षात्र धर्म के बारे में कहा गया है। उनके अनुसार "प्रजाओं की रक्षा करना, दान, यज्ञ, अध्ययन, भोगादि विषयों में न फंसना क्षत्रियों का संक्षेप में धर्म कहा है।" इसी प्रकार गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि "शौर्य, तेज बुद्धि की दक्षता, युद्ध से न भागना, दान देना तथा ईश्वर भक्ति क्षत्रियों के स्वाभाविक गुण हैं।"

(३) <u>वैश्य के गुण-कर्म</u> - मनु ने इनके कर्मों का विधान किया है कि "पशुपालन करना, दान देना, अध्ययन करना, वाणिज्य तथा सूद पर रुपया

आदर	m	respect
प्रयास करना	m+t	to try (make an effort)
तेज	m	glory
सात्विक	adj	righteous
प्रवृत्ति	f	inclination
द्योतक	adj	expressive, indicative
क्षात्र	adj	(derived from क्षत्रिय)
भोग	m	enjoyment
संक्षेप में	adv.ph	in short, in summary
शौर्य	m	heroism, chivalry
दक्षता	f	expertness
युद्ध	m	war, fighting
स्वाभाविक	adj	natural
पशुपालन	m	animal raising
वाणिज्य	m	trade
सूद	m	banking

देना, खेती करना ही वैश्यों का धर्म है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों ही द्विज वर्ग में आने वाले वर्ण के व्यक्तियों के लिए अध्ययन समान रूप से आवश्यक है।

(४) शूद्रों के गुण-कर्म - शूद्रों की उत्पत्ति ईश्वर के चरण से मानी जाती है; अतः पैर का गुण आज्ञा पालन है। इसी आधार पर मनु ने लिखा है कि "ईश्वर ने शूद्रों का एक ही धर्म बनाया है कि वे बिना ईर्ष्या के अन्य वर्णों की सेवा करें।"

वर्ण-व्यवस्था का आधार गुण एवं कर्म था, इसीलिए जब कोई व्यक्ति अपने कर्म से च्युत हो जाता था तो निश्चित रूप से वह अपने वर्ण से निकल कर अन्य वर्ण में चला जाता था। मनुस्मृति में लिखा है कि "जो द्विज वेद को न पढ़कर अन्यत्र परिश्रम करता है, वह शीघ्र ही अपने जीवन में वंश सहित शूद्र हो जाता है।" इसी प्रकार कोई व्यक्ति अपने अच्छे कर्मों से उच्च वर्ण का भी हो सकता है। विश्वामित्र क्षत्रिय थे। पर उन्होंने अपने तपोबल से ब्रह्मर्षि की श्रेणी प्राप्त की। वैसे हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म की धारणा के कारण यही विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को इस जन्म में पूर्वजन्म के

खेतीf	farming	
समान रूप से	adv.ph	similarly
चरणm	foot	
आज्ञा पालन	f+m	carrying out of orders
ईर्ष्या	f	envy
च्युत	adj	fallen
अन्यत्र	adv	elsewhere
परिश्रम	m	work, labor
वंश	m	lineage
सहित	pp	along with
उच्च	adj	high
श्रेणी	f	class, row

कर्मों के अनुसार ही विभिन्न वर्णों के घरों में जन्म मिलता है। इस वर्ण-व्यवस्था का आधार जन्म भी था। प्रायः जो जिस वर्ण के परिवार में जन्म लेता था, उसी के गुण कर्म उसमें माने जाते थे। इसी प्रकार रक्त की शुद्धता का भी वर्णन गीता में मिलता है। इस प्रकार यहाँ की वर्ण-व्यवस्था के अनेक आधार होते हुए भी कर्म पर विशेष बल था। यही कारण था कि उच्च वर्ण में जन्म लेने पर भी व्यक्ति यदि उस वर्ण के कार्य नहीं करता था तो वह निश्चित रूप से निम्न वर्ण में गिन लिया जाता था। कालान्तर में अनेक धार्मिक घात-प्रतिघातों के कारण इस समाज व्यवस्था में अवश्य कुछ परिवर्तन आया। वर्ण का आधार जो कर्म एवं जन्म तथा रक्त की शुद्धता आदि था, वह केवल जन्म रह गया। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि कर्म गुण का सर्वथा लोप हो गया। यही वर्ण-व्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप हमारे समक्ष जाति प्रथा के रूप में विकसित हुआ। ज्यों-ज्यों समाज परिवर्तित होता गया, अन्य संस्कृतियों के लोग सम्पर्क में आते गये त्यों-त्यों इसका रूप जाति जिसका जन्म मात्र रह गया - हमारे समक्ष आया। आज भारत के हिन्दू समाज में वर्ण-व्यवस्था का आदर्श रूप नहीं, अपितु अपभ्रंश रूप जाति प्रथा में मिलता है।

रक्त	m	blood
शुद्धता	f	purity
कालान्तर में	adv	in other times
घात-प्रतिघात	m	forces and counter-forces
सर्वथा	adv	in all respects
लोप	m	disappearance
बिगड़ा	m	debased, deteriorated
सम्पर्क	m	contact
आदर्श	m	ideal
अपभ्रंश	adj	fallen away, debased
जाति प्रथा	f+f	the caste system

जाति - भारतीय जाति शब्द का पर्यायवाची अंग्रेज़ी शब्द कास्ट (caste) है। यह पुर्तगाली भाषा के 'कास्ता' (casta) शब्द से बना है, जिसका अर्थ नस्ल, प्रजाति एवं भेद होता है। प्रो० वाडिया का मत है कि यह लैटिन भाषा के 'कास्तस्' शब्द के अधिक निकट है, जिसका अर्थ 'विशुद्ध' है। इस प्रकार जाति का अर्थ प्रजाति सम्बन्धी विशुद्धता से है। यह शुद्धता व्यवसाय एवं वैवाहिक जीवन में रखी जाती है। जाति शब्द की व्याख्या विभिन्न जिज्ञासु विद्वानों ने जिन्होंने कि जाति प्रथा का अध्ययन किया है, अपने-अपने अनुसार दी है। हम यहाँ कतिपय परिभाषाओं को उद्धृत करके जाति की धारणा को स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे।

- - - - -(here are included 5 definitions of *jåti* in English)

डा० माजूमदार, कूले तथा मैकाइवर की परिभाषाएँ जाति की धारणा को स्पष्ट करने में असमर्थ हैं; ये जाति का एकपक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जोकि अपवाद की स्थिति में ग़लत भी हो सकता है।

पर्यायवाची	adj	synonymous
नस्लm	race, breed	
प्रजाति	f	race, species
भेद	m	variety
वैवाहिक	adj	matrimonial
व्याख्या	f	meaning, interpretation
जिज्ञासु	adj	inquisitive (wanting to know)
कतिपय	adj/adv	some, a few
परिभाषा	f	definition
धारणा	f	concept
उद्धृत	adj	cited, extracted, quoted